

अनुनादन अ.क्रि. प्रतिनाद/अनुगूँज उत्पन्न करना।

जैसे: मुरली द्वारा अनुनादन होना पुं. अनुनाद होने की क्रिया या भाव, अनुगूँज या प्रतिध्वनि, जैसे- मृदंग का अनुनादन।

अनुनाद-विवर पुं. (तत्.) मुखविवर जिसके आकार के कारण स्वरों में अनुनाद पैदा होता है।

अनुनादित वि. (तत्.) प्रतिध्वनित, जिसका अनुनाद हुआ हो या गूँज हुई हो।

अनुनादी वि. (तत्.) प्रतिध्वनि करनेवाला, आवाज करनेवाला, गूँज पैदा करने वाला।

अनुनादीकक्ष पुं. (तत्.) [अनुनादी-कक्ष] भाषा.वि. शरीर में स्थित वे अंग या स्थान जो निकलने वाली ध्वनियों को अपने अनुनाद द्वारा और अधिक ऊँचा कर देते हैं जैसे- मुख विवर या नासिका रंध्र।

अनुनादी-विवर पुं. (तत्.) भाषा.वि. दे. अनुनादी कक्ष।

अनुनायिका स्त्री. (तत्.) नायिका की सहचरी, धात्री, दासी आदि।

अनुनासिक वि. (तत्.) वे स्वर जिनके उच्चारण में मुखविवर से निकलने वाले वायु-प्रवाह के साथ-साथ नासिका-विवर से भी वायु निःसृत होती है।

अनुनासिकता स्त्री. (तत्.) [अनुनासिक+ता प्रत्यय]

1. किसी ध्वनि में अनुनासिक होने का भाव या गुण, 2. जिस ध्वनि के उच्चारण में नासिका की सहायता ली जाए, जैसे- न और म वर्ण के उच्चारण में अनुनासिकता होती है, व्याक. स्वरों के उच्चारण में होने वाली अनुनासिकता का वह रूप जब स्वर के उच्चारण में कंठ आदि के अतिरिक्त नाक से बोलने का गुण आ जाता है जैसे- अँ, आँ, ईँ, ई आदि। (ँ) चंद्र बिंदु वह अनुनासिकता का चिह्न = अँजना, आँजता।

अनुनासिकता-चिह्न पुं. (तत्.) स्वर के ऊपर लगाया गया अनुनासिकता बोधक चिह्न, चंद्रबिंदु, जैसे- दाँत में।

अनुनासिकीकरण पुं. (तत्.) [अनुनासिक+करण] किसी शब्द में वह ध्वनि जो पहले अनुनासिक न हो किंतु बाद में परिवर्तित होकर वह अनुनासिक हो जाए, विशेषतः हिंदी भाषा में अनेक तद्भव शब्दों का अनुनासिकीकरण हो गया है जैसे- अक्षि=आँख, मुख=मुँह आदि।

अनुनीत वि. (तत्.) 1. अनुशासित, मर्यादित, गृहीत 2. विनयपूर्वक किया हुआ।

अनुन्नत वि. (तत्.) [अन्+उन्नत] 1. जो उन्नत (ऊँचा) न हो, 2. जो जीवन में उन्नति करने या पाने में सफल न हुआ हो, अनुन्नत कर्मचारी विलो. उन्नत।

अनुन्मत्त वि. (तत्.) जो उन्मत्त (मद रहित) न हो, अर्थात् जो धन, बल, वैभव आदि के कारण मतवाला न हुआ हो विलो. उन्मत्त।

अनुन्मत्ता स्त्री. (तत्.) [अनुन्मत्त+ता] किसी में उन्मत्तता न होने का भाव या गुण, उन्मत्त रहित होने की स्थिति जैसे- अनुन्मत्ता से वैभव सुशोभित।

अनुन्माद पुं. (तत्.) पागलपन का अभाव, उन्माद-हीनता **वि.** (तत्.) जो पागल न हो, जिसे उन्माद न हो।

अनुन्मील्य वि. (तत्.) [अन्+उन्मील्य] जो उन्मीलन के योग्य न हो, अविकास्य, न खिलने योग्य (पुष्प आदि), न खुलने योग्य नेत्र आदि।

अनुन्मील्य परागण पुं. (तत्.) अविकसित-पुष्प कलिका के अंदर होने वाला परागण।

अनुन्मुक्त वि. (तत्.) [अन्+अन्मुक्त] 1. जो मुक्त न किया गया हो, 2. जिसे किसी सेवा या पद से हटाया, बरखास्त न किया गया हो, 3. जिसे किसी अपराध से न्यायालय में बरी न किया गया हो या कारागार से मुक्त न किया गया हो।

अनुपंथिता स्त्री. (तत्.) [अनुपंथ+इत प्रत्यय] 1. शास्त्र-परंपरा के अनुसार आचरण का भाव/शास्त्रनिष्ठता 2. प्राचीन परम्परा के अनुपालन के प्रति रुढ़िनिष्ठता जैसे- अनुपंथिता की राह दुर्गम।